भगवद् गीता का ज्ञान – (4)

" ईश्वर का अवतार कब और क्यों होता है ? "

श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) के चौथे अध्याय के 7वें और 8वें श्लोकों में स्वयं भगवान् अपने प्रगट होने, अर्थात पृथ्वी पर अवतार लेने, का अवसर तथा प्रयोजन इस प्रकार बताते हैं –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम् ॥४:७॥

अर्थात - "हे भरतवंशी अर्जुन! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अपने रूप को रचता हूँ, अर्थात साकार रूप से पृथ्वी पर प्रकट होता हूँ, यानी अवतार लेता हूँ।" **(गीता – 4:7)**

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥४:८॥

अर्थात - "सज्जनों की रक्षा तथा पापियों का विनाश करने के लिए, और धर्म की अच्छी तरह स्थापना (अर्थात पुनर्स्थापना) करने के प्रयोजन से, मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ।" **(गीता – 4:8)**

+ + + उपरोक्त दो श्लोक भगवद् गीता के सर्वाधिक प्रसिद्ध श्लोकों में आते हैं + + +